द्वारा लिखित देवचरन चतुर्थी (पौलुस)
शुक्रवार, 25 सितम्बर 2009 14:13 - अंतिम अद्यतन गुरुवार, 29 अक्टूबर 2009 15:14

□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□

मेरा जन्म □कहन्दु परिवार में 20 जुलाई, 1974 को हुआ था□ मेरा गांव, रानीसागर, जिला-बिलासपुर की तहसील करगी रोड कोटा के अन्तर्गत आता है□ मुझे बचपन से ही प्रचलित लोककथाओं, और आंचलिक देवी देवताओं में रूचि थी□ वीर रस की कथा (काव्य) आल्हाखण्ड में मुझे विशेष आनन्द आता था□ पूजा-पाठ, छापा तिलक आदि में भी मैं शामिल रहता था□ हाई स्कूल तक जाते-जाते साथी छात्रों के सभी अवगुण मुझ में समा गये□ नशीले पदार्थों का सेवन, गाली-गलौच से भरी बातचीत तथा उद्दण्डता का मैं बुरी तरह शिकार हो गया तथा मित्रों के हर बुरे कामों में शरीक होना मेरी आदतों में शुमार हो गया□

13 सितम्बर, 1991 को मैं अपने घनिष्ठ मित्र के साथ स्कूल जाने के लिए घर से निकला किन्तु हमने विचार बदल कर फिल्म देखने जाने का मार्ग पकड़ लिया□ रास्ते में हमें □क प्रभु का सेवक मिला जिन्होंने हमें प्रभु यीशु की जीवनी, मृत्यु और फिर से जी उठने की घटना बताई तथा उद्धार और मुक्ति के विषय में बताने लगे□ हम उनकी बातों पर ध्यान न देकर व्यंग्यात्मक भाव से उनका मज़ाक उड़ाते रहे□ परन्तु वो हमारी हर धृष्टता को बड़ी सहनशीलता से सहन करते रहे□ उन्होंने हम दोनों को □क-□क पुस्तक देनी चाही मगर मैंने लेने से इंकार कर दिया□ मेरे मित्र ने कहा ''फ्री में मिल रही है तो ले लेने में क्या हर्ज है?'' उन्होंने दोनों पुस्तकें उसके हाथ में दे दीं□

हमने बड़ी बेरूखी से वह पुस्तक ले ली यह सोच कर कि ''पढ़ना किसे है? बाद में कहीं फेंक देंगे''□ इस बीच हमारा विचार फिर बदल गया और हम फिल्म न जाकर स्कूल चले गये□ हमारा मन स्कूल में भी नहीं लगा और दो पीरियड पढ़ कर वापस घर आ गये□ मेरे मित्र ने मेरे हिस्से की पुस्तक मुझे दी तो मैंने यह कहते हुए ले ली कि मुझे इसे पढ़ना तो है नहीं□ मेरे किसी काम की नहीं है□ वास्तव में मैंने वह पुस्तक लेने में इतनी बेरूखी दिखलाई कि उसे छुआ तक नहीं□ मैंने अपने मित्र से कहा कि वह उसे मेज़ पर रख दे□ वह उस पुस्तक को वहां रख कर चला गया□

इस घटना के तीन दिन बाद 16 सितम्बर को मैं अचानक बीमार पड़ गया□ मेरी हालत गम्भीर होती गई□ परिवार वालों ने मुझे तमाम वैद्य-हकीम व डॉक्टरों को दिखाया किन्तु मेरा रोग किसी की समझ में नहीं आया□ मेरी माता ने मेरे लिए मन्नतें-मनौतियां मांगी किन्तु कोई लाभ होता नज़र नहीं आया□

अपनी बीमारी में मैं काफी कमज़ोर होता चला गया, यहां तक कि मैं चारपाई से उठ भी नहीं सकता था□ लगभग □क माह से मैं बिस्तर पर पड़ा हुआ था□ 12 अक्टूबर, 1991 को जब कि घर के सब लोग अपने-अपने कार्यों से घर के बाहर थे और मैं पेट दर्द और पीड़ा से कराह रहा था□ लगभग संध्या काल चार बजे का वक्त रहा होगा□ अचानक मुझे ये शब्द सुनाई पड़े – ''उठ और प्रभु यीशु पर विश्वास कर और अपने पापों को मान ले तो तू चंगा हो जायेगा''□ मैंने इधर-उधर नजरें घुमाई किन्तु वहां कोई दिखलाई नहीं पड़ा□ मैंने मन में सोचा चलो इसे ही परखा जाये□ मैं बड़े प्रयत्न से उठकर अपने पढ़ने वाले कमरे तक गया और देखा कि मेज़ पर ''अंधकार से ज्योति में'' नामक □क पुस्तक ज्यों की त्यों रखी थी और उस पर काफी धूल जम चुकी थी□ मैंने उसे उठाया और अपने बिस्तार पर लेटे-लेटे, उसे पढ़ने लगा□ उस पुस्तक से मुझे परमेश्वर द्वारा संसार की सृष्टि एवं प्रभु यीशु द्वारा पापों से मुक्ति एवं उद्धार का मार्ग का ज्ञान प्राप्त हुआ□ पत्री का पढ़ने के बाद उन निराशा के क्षणों में मुझे आशा की किरण दिखाई पड़ी□ मैं प्रभु यीशु से प्रार्थना करने लगा□ मैंने कहा, ''यदि तू सच्चा ईश्वर है, तो मुझे चंगा कर दे□ यदि मैं चंगा हो जाऊंगा तो आजीवन तुझे ग्रहण करते हुए अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करूंगा''□

इस प्रकार से प्रार्थना करने के बाद मुझे काफी हल्कापन लगा और मुझे नींद आ गई□ लगभग तीन दिन में ही मैं आश्चर्यजनक रूप से पूर्ण स्वस्थ हो गया□ मैंने जाना कि प्रभु यीशु मसीह ही सच्चा □वं जीवित परमेश्वर है□

चंगा हो जाने के बाद मैंने उन्हीं प्रभु सेवक से सम्पर्क किया जिन्होंने ''अंधकार से ज्योति में'' पुस्तक हमें दी थी□ उन्होंने बड़ी आत्मीयता से मुझे वचन में शिक्षा दी□ मैं उनके द्वारा प्रभु की संगति में बना रहा और 24 मार्च, 1993 को वह शुभ दिन आया जब मैंने व्यक्तिगत रूप से प्रभु यीशु को स्वीकारते हुये बपतिस्मा लिया□

प्रभु को ग्रहण कर लेने के बाद मुझे अपने परिवार व समाज के विरोधों का सामना करना पड़ा किन्तु मैं कतई विचलित नहीं हुआ□ प्रभु का मार्ग ही चुनौतियों और संघर्ष (क्रूस) का मार्ग है□

मैं वर्तमान में प्रभु में आनन्दित हूं और जो कि पहले मैं बहुत क्रोधी स्वभाव का था अब अपनी सब पूर्व कमज़ोरियों से मुक्त हो गया□ मैंने बाइबिल कॉलेज में अध्ययन किया और वर्तमान में सुसमाचार प्रचार के कार्य में लगा हूं□ पाठक बन्धुओं से मेरा नम्र निवेदन है कि मेरे लिए प्रार्थना करें कि मैं कई आत्माओं को प्रभु की शरण में लाने का कार्य कर सकूं□ प्रभु यीशु मसीह की स्तुति हो□

द्वारा लिखित देवचरन चतुर्थी (पौलुस)
शुक्रवार, 25 सितम्बर 2009 14:13 - अंतिम अद्यतन गुरुवार, 29 अक्टूबर 2009 15:14

□□□□□□□ □□□□□□□□□ (□□□□□□), □□□□□ □□□□, □□□□□, □□□□□□□□□□ (□.□□□.)